



11075CH06

पञ्चमः पाठः

शुकशावकोदन्तः

प्रस्तुत पाठ कविकुलशिरोमणि महाकवि बाणभट्ट की अद्वितीय कथात्मक रचना ‘कादम्बरी’ के कथामुख भाग का एक अंश है। महाराज शूद्रक के दरबार में एक चाणडाल-कन्या स्वर्ण-पिङ्जर में बन्द तोते को उपहार स्वरूप प्रस्तुत करती है। विश्राम के क्षणों में वही तोता महाराज को आपबीती सुनाता है कि वह किस प्रकार घनघोर विन्ध्याटवी में स्थित पम्पा सरोवर के तट पर जीर्ण सेमल के वृक्ष के कोटर से वृद्ध शबर के द्वारा निकाल कर फेंके जाने पर भयंकर दुपहरी में जाबालि मुनि के पुत्र हारीत के द्वारा आश्रम में लाया गया। सम्पूर्ण कथा कुतूहलपूर्ण एवं रोचक है।

अस्ति मध्यदेशालङ्कारभूता मेखलेव भुवो विन्ध्याटवी नाम।
तस्यां च पम्पाभिधानं पद्मसरः। तस्य पश्चिमे तीरे महाजीर्णः
शाल्मलीवृक्षः। तस्यैवैकस्मिन् कोटरे निवसतः कथमपि पितुरहमेव
सूनुरभवम्। ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे
लोकान्तरमगमत्। तातस्तु सुतस्नेहादन्तर्निर्गृह्य शोकं मत्संवर्धनपर
एवाभवत्। परनीडनिपतिताभ्यः शालिवल्लरीभ्यस्तण्डुलकणान्
शुककुलावदलितानि च फलशक्लानि समाहृत्य मह्यमदात्।
मदुपभुक्तशेषमेवाकरोदशनम्।

एकदा तु प्रत्यूषसि सहसैव तस्मिन् वने मृगयाकोलाह-
लध्वनिरुद्धरत्। आकर्ण्य च तमहमुपजातवेपथुर्भक्तया भयविह्वलः
पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्। अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् क्षोभितकानने
मृगयाकलकले पितुरुत्सङ्गादीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां
प्रसार्य किमिदमिति दिदृक्षुरभिमुखमापतच्छबरसैन्यमदाक्षम्। मध्ये च
तस्य प्रथमे वयसि वर्तमानं शबरसेनापतिमपश्यम्।

आसीच्च मे मनसि-‘अहो मोहप्रायमेतेषां जीवितम्। आहारे मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवारुतं, प्रज्ञा शकुनिज्ञानम्। यस्मिन्नेव कानने निवसन्ति तदेवोत्खातमूलमशेषतः कुर्वन्ति। इति चिन्तयत्येव मयि शबरसेनापतिः स आगत्य तस्यैव तरोरधश्छायायां परिजनोपनीतपल्लवासने समुपाविशत्। आपीतसलिलो भुक्तमृणालिक-इचोत्थायापगतश्रमः सकलेन सैन्येन सहाभिमतां दिशमयासीत्।

एकतमस्तु जरच्छबरस्तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत्। अन्तरिते च सेनापतौ स सुचिरमारुक्षुस्तं वनस्पतिमामूलादपश्यत्। उत्क्रान्तमिव तस्मिन् क्षणे तदालोकनभीतानां शुककुलानामसुभिः। किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्। यतः स तमयत्नैव पादपमारुह्य फलानीव तस्य वनस्पतेः कोटरेभ्यः शुकशावकानग्रहीत्। अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितावपातयत्।

तातस्तु तदवलोक्य विषादशून्यामश्रुजलप्लुतां दृशमितस्ततो विक्षिपन् पक्षसंपुटेनाच्छाद्य मां स्नेहपरवशो मदक्षणाकुलोऽभवत्। असावपि पापः क्रमेण शाखान्तरैः सञ्चरमाणो मत्कोटरद्वारमागत्य भुजङ्गभीषणं प्रसार्य बाहुं मुहुर्मुहुर्दत्तचञ्चुप्रहारमुत्कृजन्तमाकृष्य तातमपगतासुमकरोत् मां तु स्वल्पत्वात् कथमपि नालक्षयत्। उपरतं च तमवनितलेऽमुञ्चत्। अहमपि तच्चरणान्तराले प्रवेशितशिरोधरो निभृतमङ्गनिलीनस्तेनैव सह पवनवशसम्पुञ्जितस्य शुष्कपत्रराशे रूपरि पतितमात्मानमपश्यम्। यावच्चासौ तरुशिखरान्नावतरति तावदहं पितरमुपरतमुत्सृज्य नृशंस इव स्नेहरसानभिञ्जो भयेनैव केवलमभिभूयमानो लुठन्नितस्ततो नातिदूरवर्तिनस्तमालपादपस्य मूलदेशमविशम्।

अजातपक्षतया च मुहुर्मुहुर्मुखेन पततः स्थूलस्थूलं श्वसतो धूलि-धूसरितस्य संसर्पतो मम समभूम्ननसि-नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्। एवमुपरतेऽपि ताते यदहं जिजीविषामि। धिङ्गमामकरुणमतिनिष्ठुरमकृतज्ञम्। खलं हि खलु मे हृदयम्। तातेन यत्कृतं सर्वं तदेकपदे मया विस्मृतम्। सर्वथा न कञ्जिवन्न खलीकरोति जीवनाशा यदीदृगवस्थमपि मामायासयति जलाभिलाषः। दिवसस्य चेयमतिकष्टा दशा वर्तते। आतपसन्तप्तपांसुला भूमिः।

पिपासावसन्नानि गन्तुमल्पमपि मे नालमङ्-कानि। अप्रभुरस्म्यात्मनः।
सीदति मे हृदयम्। अथकारतामुपयाति मे चक्षुः। अपि नाम खलो
विधिरनिच्छतोऽपि मे मरणमद्यैवोपपादयेत्।



इत्येवं चिन्तयत्येव मयि हारीतनामा जाबालिमुनितनयः
सवयोधिरपरैर्मुनिकुमारकैः सह तेनैव पथा तदेव कमलसरः सिस्ना-
सुरुपागमत्। प्रायेणाकारणमित्राण्यतिकरुणाद्वाणि च भवन्ति सतां
चेतांसि। यतः स तदवस्थमवलोक्य मां सरस्तीरमानाययत्, स्वयं
चादाय सलिलबिन्दूनपाययत्। समुपजातप्राणं मां छायायां
निधायाकरोत् स्नानविधिम्। अभिषेकावसाने सकलेन मुनिकुमार-
कदम्बकेनानुगम्यमानो मां गृहीत्वा तपोवनमगच्छत्।

শব্দার্থ: টিপ্পণ্যশচ

- মধ্যদেশালঙ্কারভূতা** - মধ্যশচাসৌ দেশশচ মধ্যদেশঃ (কর্মধারয সমাস) তস্যালঙ্কারভূতা, (তত্পুরুষ) মধ্যদেশ কী শোভা বদ্ধানে বালী।
- বিন্ধ্যাটবী** - বিন্ধ্যস্য অটবী, বিন্ধ্য পর্বত পর লগা ঘনা জংগল।
- মহাজীর্ণ:** - মহান् চ অসৌ জীর্ণঃ চ (কর্মধারয) বড়া পুরানা
- নিবসত:** - নি + বস্ + শতু ষষ্ঠী এ০ব০, রহনে বালে
- জায়মানস্য** - জন্ + কর্তৃবাচ্য + শানচু ষষ্ঠী এ০ ব০, পৈদা হোতে হুए।
- অগমত্** - গম্ ধাতু লুড় লকার প্র০ পু০ এ০ ব০, গई।
- নিগৃহ্য** - নি + গ্রহ + ক্ত্বা > ল্যপ, রোককর।
- পরনীডনিপতিতাভ্যঃ** - পরেষাং নীডেভ্যঃ নিপতিতাভ্যঃ দুসরোঁ কে ঘোসলোঁ সে গিরী হুই।
- শুককুলাবদলিতানি** - শুকানাং কুলৈঃ অবদলিতানি, তত্পুরুষ, তোতোঁ কে জ্ঞুণ্ড দ্বারা কতরে হুए।
- ফলশকলানি** - ফলানাং শকলানি-খণ্ডানি, তত্পুরুষ, ফলোঁ কে টুকড়ে।
- সমাহৃত্য** - সম্ + আ + হ + ক্ত্বা > ল্যপ, লাকর।
- উপভুক্তশেষম্** - উপ + ভুজ্ + ক্ত, উপভুক্তাত্ শেষম্, খানে সে বচা হুআ।
- অশনম্** - অশ্ + ল্যুট্ > অন, ভোজন।
- প্রত্যুষসি** - ঊষসম্ প্রতি, অরুণোদয সে পূর্ব।
- মৃগযা** - আখেটঃ, শিকার।
- উপজাতবেপথুঃ** - উপজাত: বেপথুঃ যস্য সঃ বহুবীহি, কাঁপতা হুআ।
- অর্ভকতযা** - শাবক হোনে সে, শুকশাবক কা বিশেষণ।
- পক্ষপুটান্তরম্** - পক্ষযোঃ পুটস্যান্তরম্, তত্পুরুষ, পঞ্চোঁ কে পুটক কে ভীতর।
- ক্ষোভিতকাননে** - ক্ষোভিতং কাননং যেন সঃ তস্মিন্, জংগল কো ব্যাকুল করনে বালে
- প্রসার্য** - প্র + সৃ + ণিচ্ + ক্ত্বা > ল্যপ, ফেলাকর।
- দিদৃক্ষু:** - দৃশ্ + সন্ + উ, দ্রষ্টুম ইচ্ছুঃ, দেখনে কা ইচ্ছুক।
- শি঵ারুতম্** - শি঵াযা: - শৃগাল্যাঃ রুতম্ শব্দম্, তত্পুরুষ, সিয়ারিনোঁ কা রেনা।
- শকুনিজ্ঞানম্** - শকুনীনাং জ্ঞানম্, তত্পুরুষ, পক্ষিবিষয়ক জ্ঞান।

- उत्खातमूलम्**
- उत्खातं मूलं यस्य तम् बहुव्रीहि, जिसकी जड़ें उखड़े गई हैं।
- परिजनोपनीतम्**
- परिजनैः - भृत्यैः उपनीतम्, तत्पुरुष, सेवकों द्वारा लाए गये।
- आपीतसलिलः**
- आपीतं सलिलं येन सः, पानी पीने पर।
- अपगतश्रमः**
- अपगतः श्रमः यस्य सः, श्रम समाप्त होने पर।
- अभिमतम्**
- अभि + मन् + क्त, स्वीकृतम्, प्रिय, इच्छित।
- अन्तरिते**
- चले जाने पर।
- आरुरुक्षुः**
- आ + रुह + सन् + उ प्रत्यय, चढ़ने की इच्छा से।
- उत्क्रान्तम्**
- उत् + क्रम् + क्त, उड़ गये।
- असुभिः**
- प्राणैः, प्राणों से।
- जरच्छबरः**
- जरन् चासौ शबरः च भिल्लः, कर्मधारय, बूढ़ा भील।
- अपगतासुम्**
- अपगतः असवः यस्य सः तम् बहुव्रीहि, प्राणहीन, मृत।
- अश्रुजलप्लुताम्**
- अश्रूणां जलैः प्लुताम्, तत्पुरुष, आँसू के जल से भीगी हुई।
- संचरमाणः**
- सम् + चर् + यक् + शानच्, कर्म में लट्, संचार करता हुआ, चलता हुआ।
- प्रवेशितशिरोधरः**
- प्रवेशिता स्थापिता शिरोधरा ग्रीवा येन सः, बहुव्रीहि, गर्दन को छिपाने वाला।
- निभृतम्**
- नि + भृ + क्त, निश्चल।
- नृशंसः**
- नरं शंसति हिनस्ति इति, क्रूर।
- अभिभूयमानः**
- अभि + भू + यक् + शानच्, कर्म में लट्, प्रभावित होता हुआ, आक्रान्त होता हुआ।
- अजातपक्षतया**
- पंख उत्पन्न न होने से।
- अभिमततरम्**
- अभि, मन् + क्त + तरप्, प्रियतर, अभीष्टतर।
- जिजीविषामि**
- जीव् + सन् लट्, उ० पु०, ए०व०, जीना चाहता हूँ।
- आतपसन्तप्तपांसुला**
- आतपेन घर्मेण सन्तप्ता पांसुला च धूलिः, तत्पुरुष + कर्मधारय समास, धूप से तपी धूल वाली।
- सिस्मासुः**
- स्ना + सन् + उ, स्नातुमिच्छुः, नहाने की इच्छा रखने वाला।
- मुनिकुमारकदम्बकेन**
- मुनीनां कुमाराणां कदम्बकेन वर्गण, तत्पुरुष समास, मुनिकुमारों के समूह से।
- अनुगम्यमानः**
- अनु + गम् + कर्मवाच्य + शानच् पु० प्र० ए० व०, पीछा किया जाता हुआ।

1. निम्नलिखितप्रश्नानां उत्तरम् संस्कृतेन लिखत

- (क) पम्पाभिधानं पद्मसरः कुत्रासीत्?
 (ख) शुकः क्व निवसति स्म?
 (ग) शबराणां कीदृशं जीवनं वर्तते?
 (घ) हारीतः कस्य सुतः आसीत्?
 (ङ) जीवनाशा किं करोति?
 (च) शुकस्य पिता कीदृशानि फलशकलानि तस्मै अदात्?
 (छ) मृगयाध्वनिमाकर्ण्य शुकः कुत्र अविशत्?
 (ज) शबरसेनापतिः कस्मिन् वयसि वर्तमानः आसीत्?
 (झ) केषां किम् दुष्करम्?
 (ञ) कः शुकस्य तातम् अपगतासुमकरोत्?

2. पाठमाधृत्य बाणभट्टस्य गद्यशैल्याः वैशिष्ट्यानि लिखत
3. मातृभाषया शबरसेनापतेः चरित्रम् लिखत
4. अधोलिखितानां भावार्थं लिखत

- (क) किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्।
 (ख) नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्।
 (ग) सर्वथा न कञ्जिन्न खलीकरोति जीवनाशा।
 (घ) प्रायेण अकारणमित्राण्यतिकरुणाद्वार्णि च भवन्ति सतां चेतासि।

5. शुक्लावकस्य आत्मकथां संक्षेपेण लिखत
6. अधोलिखितेषु शब्देषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत

समाहृत्य, आकर्ण्य, निष्क्रम्य, विक्षिपन्, उपरतम्, गृहीत्वा, अभिलाषः, संचरमाणः।

7. रिक्तस्थानानि पूरयत

- (क) अस्ति भुवो मेखलेव नाम।
 (ख) ममैव जायमानस्य मे जननी मृता।
 (ग) अहो मोहप्रायम् जीवितम्।
 (घ) तातः मद्रक्षणे आकुलः अभवत्।
 (ङ) सर्वथा न न खलीकरोति जीवनाशा।

8. सन्धिविच्छेदं कुरुत

तस्यैवैकस्मिन् तातस्तु प्रत्यूषसि, अचिराच्च, चिन्तयत्येव, फलानीव, तावदहम्, तेनैव, चादाय।



पम्पा :- पम्पाभिधानं प्रसिद्धं सरः यद् अद्यत्वे पेन्नसिर इति नामाभिधीयते। सरसः समीप एव ऋष्यमूकपर्वतो वर्तते पम्पा इति नदी अस्माद् एव सरसः निर्गता।

विन्ध्याटवी :- एका पर्वतश्रेणी या उत्तरभारतं दक्षिणभारतात् विभजति। सप्तकुलपर्वतेषु इयं परिगण्यते। इयं पर्वतमाला मध्यदेशस्य दक्षिणसीमिन् वर्तते।

हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि।

प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तिः॥ (मनुस्मृतिः 2/21)

एतासु पर्वतमालासु गहनानि वनानि सन्ति यानि 'विन्ध्याटवी' इति पदेनाभिधीयन्ते।

किमिव हि दुष्करमकरुणानाम् इति अस्मिन् पाठे सूक्तिः। एतादृश्यः अन्याः सूक्तयोऽन्वेष्टव्याः।